Biyani's Think Tank

Concept Based Notes

Pedagogy of Book-Keeping

[B.Ed. - I & II Year]

[B.Ed. M.Ed. - B.A.B.Ed.]

Ms. Sarita Sharma
(Assistant Professor)
Education Department
Biyani Girls B.Ed. College

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India

Published by:
Think Tanks
Biyani Group of Colleges
Concept & Copyright:
Biyani Shikshan Samiti Sector-3, Vidhyadhar Nagar, Jaipur-302023 (Rajasthan)
Ph : +91-8696218218, +91-8290636942 Fax: 0141-2338007
E-mail: acad@biyanicolleges.org
Website: www.gurukpo.com;www.biyanicolleges.org
ISBN:- 978–93–83343–11–9
Edition: 2025-26

While every effort is taken to avoid errors or omissions in this Publication, any mistake or omission that may have crept is not intentional. It may be taken note of that neither the publisher nor the author will be responsible for any damage or loss of any kind arising to anyone in any manner on account of such errors and omissions.

Leaser Type Setted by:

Biyani College Printing Department

Preface

I am glad to present this book, especially designed to serve the need soft he students. The book has been written keeping in mind the general weakness in understanding the fundamental concepts of the topics. The book is self- explanatory and adopts the “Teach Yourself” style. It is based on question- answer pattern. The language of book is quite easy and understandable based on scientific approach.

Any further improvement in the contents of the book by making corrections, omission and inclusion is keen to be achieved based on suggestions from the readers for which the author shall be obliged.

I acknowledge special thanks to Dr. Rajeev Biyani, Chairman & Dr. Sanjay Biyani, Director (Acad.) Biyani Group of Colleges, who are the backbones and main concept provider and also have been constant source of motivation throughout this Endeavour. They played an active role in coordinating the various stages of this Endeavour and spearheaded the publishing work.

I look forward to receiving valuable suggestions from professors of various educational institutions, other faculty members and students for improvement of the quality of the book. The reader may feel free to send in their comments and suggestions to the under mentioned address.

Author

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal In India

INDEX

S. No.	Topic	Page No.
1.	Unit-1 • Meaning and Scope of Book-Keeping & Accountancy • Aims and Objectives of Book-Keeping & Accountancy • Importance of Book-Keeping and Accountancy • Bloom's Taxonomy of Objectives	3-6
2.	Unit-2 • Planing for Teaching and Role of Teacher • Microteaching, Yearly Plan, Unit plan and daily lesson plan • tdeacher role and attitude • maxims and principles of dclassroom teaching • Teaching aids	7-12
3.	Unit-3 Teaching approaches of book-keeping and accountancy • Journal Approach • Ledger Approach • Cash Approach • Equation Approach • Various mthods of teaching bool- keeping and Accountancy Project, Problem Solving, Lecture cum Demonstration Method • Technique and Devices of Book-Keeping & Accountancy	13-18
4.	Unit-4 • Principal and Approches of Framing Syllabus • Text Book of Book-Keeping and Accountancy, Importanc, Crite Area for selection of Text Book reference and Journal. • Quality of Good Teacher.	19-23
5.	Unit-5 • Evaluation of Students performance • Acchivement Test • Diagnostic Test • Blue Print	24-27

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

Pedagogy of Book Keeping and Accountancy

Unit–1

प्र–1 बहीखाता क्या है परिभाषित कीजिए ।

What is bookkeeping define-

उत्तर बहीखाता, जिसे बुककीपिंग या पुस्तपालन भी कहा जाता है, एक प्रक्रिया है जिसमें वित्तीय लेन–देनों का रिकॉर्ड किया जाता है, व्यवस्थित किया जाता है, और बनाए रखा जाता है. यह एक व्यवसाय के सभी वित्तीय लेनदेन का रिकॉर्ड रखने, व्यवस्थित करने और बनाए रखने की प्रक्रिया है, जिसमें बिक्री, खरीद, व्यय, राजस्व और अन्य वित्तीय गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं.

प्र–2 विद्यालय पाठ्यक्रम में बही खाता शिक्षण का महत्व बताइए ।

Explain the importance in school curriculum of teaching bookkeeping .

उत्तर विद्यालयी पाठ्यक्रम में बहि खाता (लेखा) शिक्षा का महत्व यह है कि यह छात्रों को वित्तीय साक्षरता, व्यवसायिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल प्रदान करता है। इससे उन्हें भविष्य में बेहतर आर्थिक निर्णय लेने और व्यावसायिक क्षेत्र में सफल होने में मदद मिलती है.

बही खाता शिक्षा का महत्व–

वित्तीय साक्षरताः बहि खाता शिक्षा छात्रों को आय, व्यय, लाभ, हानि, और संपत्ति– देनदारी जैसे वित्तीय अवधारणाओं को समझने में मदद करती है। यह उन्हें अपने पैसे को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने और आर्थिक रूप से सुरक्षित रहने में सक्षम बनाती है.

व्यवसाय और वाणिज्य में ज्ञान– बहीखाता शिक्षा व्यवसाय और वाणिज्य के कामकाज को समझने में मदद करती है। इससे छात्रों को व्यवसाय शुरू करने, प्रबंधित करने और वित्तीय रूप से सफल होने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्राप्त होता है.

व्यवहारिक कौशल– बहीखाता शिक्षा छात्रों को वित्तीय रिकॉर्ड रखने, वित्तीय विवरण बनाने और वित्तीय विश्लेषण करने जैसे व्यावहारिक कौशल प्रदान करती है। यह उन्हें व्यावसायिक वातावरण में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने में मदद करती है.

रोजगार के अवसर– बहीखाता शिक्षा वाले छात्र लेखाकार, वित्तीय विश्लेषक, और व्यवसाय प्रबंधक जैसे पदों पर नौकरी के लिए बेहतर रूप से तैयार रहते हैं.

आर्थिक रूप से सूचित नागरिक– बहीखाता शिक्षा छात्रों को आर्थिक निर्णय लेने और आर्थिक रूप से सूचित नागरिक बनने में मदद करती है। इससे उन्हें अपने व्यक्तिगत वित्त को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने और आर्थिक रूप से मजबूत होने में मदद मिलती है.

प्र–3 बही खाता एवं लेखांकन में अंतर बताइए।

Explain the differences between bookkeeping and accountancy-

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

उत्तर 1. **बही खाता (bookkeeping)**

परिभाषा– बही खाता एक लेखांकन दस्तावेज़ होता है जिसमें प्रत्येक खाते (जैसे दृ ग्राहक खाता, विक्रेता खाता, नगद खाता आदि) के लेन–देन को क्रमबद्ध और विस्तृत रूप से दर्ज किया जाता है।

प्रमुख उद्देश्य– किसी एक विशेष खाते की स्थिति जानना कृ जैसे कितना लेन–देन हुआ, कितना बकाया है आदि।

स्वरूप– यह लेखांकन की एक पुस्तक या खंड होता है, जो लेखांकन प्रक्रिया का एक भाग है।

उदाहरण– राम खाता, नगद खाता, बिक्री खाता आदि।

2. **लेखांकन (Accounting)–** परिभाषाः लेखांकन एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें लेन–देन को पहचानना, दर्ज करना, वर्गीकृत करना, सारांश बनाना और विश्लेषण करना शामिल है ताकि व्यवसाय की आर्थिक स्थिति का निर्धारण किया जा सके।

प्रमुख उद्देश्यः– व्यवसाय की कुल आर्थिक स्थिति और प्रदर्शन को दर्शाना।

स्वरूप– यह एक प्रणाली या प्रक्रिया है जो विभिन्न पुस्तकों (जैसे वही खाता, ख रवनतदंसे आदि) का उपयोग करती है।

उदाहरण– वित्तीय विवरण तैयार करना, लाभ–हानि का हिसाब लगाना आदि।

प्र–4 बही खाता शिक्षण के क्षेत्र को स्पष्ट कीजिए ।

Explain the scope of teaching bookkeeping -

उत्तर बहीखाता शिक्षण के प्रमुख क्षेत्रः

1. **मूल लेखांकन सिद्धांतों का शिक्षण–**

जैसे – लेन–देन, खाता, जर्नल, लेज़र, ट्रायल बैलेंस, आदि का ज्ञान कराना।

2. **वित्तीय विवरणों की तैयारी–**

जैसे – लाभ–हानि खाता, आय विवरण (Income Statement), तथा बैलेंस शीट बनाना।

3. **प्रबंधन लेखांकन (Management)**

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्र–1 उच्च माध्यमिक स्तर पर बही खाता शिक्षण के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का वर्णन कीजिए ।

Describe the aims and objectives of teaching bookkeeping at higher secondary level -

उत्तर उच्च माध्यमिक स्तर पर बही खाता (लेखांकन/अकाउंटिंग) शिक्षण के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का वर्णन निम्नलिखित बिंदुओं में किया जा सकता हैः

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

1. **ज्ञानात्मक उद्देश्य (Cognitive Objectives)**– विद्यार्थियों को लेखांकन की मूल अवधारणाओं, सिद्धांतों और प्रक्रियाओं की जानकारी देना।

   बहीखाते से संबंधित विभिन्न दस्तावेजों (जैसे जर्नल, खाता बही, आज की पुस्तिका आदि) की समझ विकसित करना।

   लेखांकन चक्र की समग्र जानकारी प्रदान करना– लेन–देन की पहचान से लेकर अंतिम खातों की तैयारी तक।

2. **कौशल विकास उद्देश्य (Skill Development Objectives)**–विद्यार्थियों में लेन–देन को सही तरीके से दर्ज करने, वर्गीकृत करने और सारांशित करने का कौशल विकसित करना। खाता पुस्तकों को व्यवस्थित और सटीक रूप से तैयार करने की क्षमता विकसित करना। त्रुटियों को पहचानने और सुधारने का कौशल प्राप्त करना। कम्प्यूटर पर लेखांकन सॉफ्टवेयर (जैसे Tally) के प्रयोग का प्रारंभिक ज्ञान देना।

3. **व्यवहारात्मक उद्देश्य (Affective Objectives)**– ईमानदारी, जिम्मेदारी और गोपनीयता जैसे नैतिक मूल्यों को आत्मसात कराना जो लेखांकन में आवश्यक हैं। टीमवर्क, समय प्रबंधन और अनुशासन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।

4. **व्यावसायिक तैयारी का उद्देश्य (Vocational Preparation Objectives)**– लेखांकन से जुड़े व्यवसायों और करियर की संभावनाओं के प्रति रुचि उत्पन्न करना। भविष्य में अकाउंटेंट, ऑडिटर, टैक्स कंसल्टेंट, आदि बनने की आधारशिला तैयार करना।

5. **विश्लेषणात्मक सोच और निर्णय क्षमता**– लेखांकन सूचनाओं के आधार पर आर्थिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना। वित्तीय विवरणों का विश्लेषण कर उनके आधार पर निष्कर्ष निकालने की योग्यता उत्पन्न करना

प्र–2 ब्लूम टैक्सनॉमी के अनुसार उद्देश्यों का वर्गीकरण कीजिए।

Classify the objectives according to bloom taxonomy-

उत्तर ब्लूम की टैक्सनॉमी (Bloom's Taxonomy) एक शैक्षिक ढांचा है जिसका उपयोग शिक्षण उद्देश्यों को व्यवस्थित करने के लिए किया जाता है। इसे 1956 में बेंजामिन ब्लूम और उनके सहयोगियों ने विकसित किया था। इसके अनुसार, उद्देश्यों का वर्गीकरण तीन प्रमुख क्षेत्रों में किया गया है:

1. **संज्ञानात्मक क्षेत्र (Cognitive Domain)**– यह ज्ञान और बौद्धिक क्षमताओं से संबंधित होता है। इसमें छह स्तर होते हैं (संशोधित संस्करण के अनुसार):

   अ. स्मरण (Remembering)– तथ्यों को याद रखना

   उदाहरणः परिभाषाएँ याद करना, तिथियाँ याद रखना

   ब. समझना (Understanding)– अर्थ को समझना

   उदाहरणः किसी अवधारणा को अपने शब्दों में समझाना

   स अनुप्रयोग (Applying)– सीखी गई जानकारी को नए संदर्भों में उपयोग करना

उदाहरणः गणितीय सूत्रों का प्रयोग करना

द. विश्लेषण (Analyzing)– जानकारी को भागों में विभाजित कर उनका विश्लेषण करना

उदाहरणः किसी कहानी की विषयवस्तु और पात्रों का विश्लेषण करना

य. सिंथेसिस/निर्माण (Evaluating) दृ सूचना का मूल्यांकन करना और तर्क करना

उदाहरणः किसी तर्क के पक्ष–विपक्ष में राय देना

र. सृजन (Creating)– नई चीजें बनाना या मौलिक विचार प्रस्तुत करना

उदाहरणः कहानी लिखना, प्रोजेक्ट बनाना

2. **भावात्मक क्षेत्र (Affective Domain)–** यह भावनाओं, दृष्टिकोणों, मूल्यों और रुचियों से जुड़ा होता है। इसके स्तर हैंः

अ. प्राप्ति (Receiving)– ध्यान देना

ब.. प्रतिक्रिया (Responding)– सक्रिय भागीदारी दिखाना

स. मूल्यांकन (Valuing)– किसी विचार या मूल्य को अपनाना

द. संगठन (Organizing)– मूल्यों को प्राथमिकता देना

य. चरित्र निर्माण (Characterization)– मूल्यों के अनुसार जीवन जीना

3. **मनोदैहिक क्षेत्र (Psychomotor Domain)–** यह शारीरिक कौशलों और हाथों के कार्यों से संबंधित होता है। इस क्षेत्र के स्तरों में हैंः

अ. अनुकरण (Imitation)– किसी कार्य को देखकर दोहराना

ब. प्रयोग (Manipulation)– अभ्यास द्वारा कार्य करना

स. सटीकता (Precision)– त्रुटिरहित रूप से कार्य करना

द. कलाप्रवीणता (Articulation)– जटिल कार्यों का संयोजन

य. स्वचालितता (Naturalization)– बिना प्रयास के कार्य कर पाना

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

Unit–2

प्र–1 बहीखाता शिक्षण में शिक्षक की भूमिका समझाइए ।

Explain the role of the teacher in teaching bookkeeping -

उत्तर बही खाता शिक्षण में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि यह विषय विद्यार्थियों को लेखांकन (Accounting) की मूलभूत जानकारी देने के लिए सिखाया जाता है। इसमें शिक्षक की भूमिका निम्नलिखित प्रकार से होती हैः

1. मूल अवधारणाओं को स्पष्ट करनाः शिक्षक छात्रों को बही खाता, लेन–देन, डेबिट–क्रेडिट, जर्नल, लेज़र आदि की स्पष्ट और सरल समझ प्रदान करते हैं।
2. उदाहरणों द्वारा समझानाः शिक्षक व्यवहारिक उदाहरणों और दैनिक जीवन के लेन–देन से जुड़ी घटनाओं के माध्यम से विषय को रोचक और समझने योग्य बनाते हैं।
3. प्रायोगिक शिक्षणः शिक्षक छात्रों को बही खाता तैयार करने की प्रक्रिया को अभ्यास के माध्यम से सिखाते हैं, जिससे वे वास्तविक लेखांकन के लिए तैयार हो सकें।
4. सुधार और मूल्यांकनः शिक्षक छात्रों की तैयार की गई प्रविष्टियों और खातों की जांच करते हैं और आवश्यक सुधार करवाते हैं।
5. समीक्षा और संदेह समाधानः शिक्षक विद्यार्थियों के संदेहों का समाधान करते हैं और पुनरावृत्ति के माध्यम से उनके ज्ञान को सुदृढ़ करते हैं।
6. तकनीकी साधनों का उपयोगः आधुनिक समय में शिक्षक कंप्यूटर, अकाउंटिंग सॉफ्टवेयर या स्मार्ट क्लास तकनीकों का उपयोग कर छात्रों को और अधिक प्रभावी ढंग से सिखाते हैं।

बही खाता शिक्षण में शिक्षक केवल जानकारी देने वाले नहीं होते, बल्कि वे छात्रों के लिए एक मार्गदर्शक, प्रेरक और सहायक की भूमिका निभाते हैं, जो उन्हें एक कुशल लेखाकार बनने की दिशा में आगे बढ़ाते हैं।

अगर आप चाहें तो मैं इसका एक छोटा निबंध या प्रेज़ेंटेशन भी तैयार कर सकता हूँ।

प्र–2 प्रस्तावना कौशल को स्पष्ट कीजिए ।

Explain the introduction skill-

उत्तर प्रस्तावना कौशल (Introduction Skill) एक महत्वपूर्ण संवादात्मक और लेखन कौशल है, जिसमें किसी विषय, लेख, भाषण या प्रस्तुति की शुरुआत प्रभावशाली और स्पष्ट रूप से की जाती है। इसका उद्देश्य श्रोता या पाठक का ध्यान आकर्षित करना और उसे आगे की बातों के लिए तैयार करना होता है।

प्रस्तावना कौशल के प्रमुख तत्व–

1. **ध्यान आकर्षण (Attention Grabber)–** शुरुआत कुछ रोचक, प्रेरणादायक या चौंकाने वाली बात से की जाती है ताकि श्रोता/पाठक की रुचि जागे।
2. **विषय का परिचय–** मुख्य विषय की संक्षिप्त जानकारी दी जाती है कि आगे क्या बताया जाएगा।

3. **उद्देश्य स्पष्ट करना**– यह बताया जाता है कि इस प्रस्तुति, लेख या भाषण का उद्देश्य क्या है।
4. **संभावित संरचना का संकेत**– कभी–कभी यह भी बताया जाता है कि किस क्रम में विषय को प्रस्तुत किया जाएगा।
5. **शब्द चयन और शैली**– भाषा सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली होनी चाहिए, जिससे श्रोता या पाठक जुड़ाव महसूस करें।

प्र–3 दैनिक पाठ योजना का महत्व बताइए ।

Explain the importance of daily lesson plan.

उत्तर दैनिक पाठ योजना का महत्व शिक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली, संगठित और लक्ष्योन्मुख बनाता है। इसके कुछ प्रमुख महत्व इस प्रकार हैं:

1. **सुनियोजित शिक्षण**– यह शिक्षक को पाठ पढ़ाने से पहले उसकी योजना बनाने में मदद करती है, जिससे शिक्षण अधिक सुव्यवस्थित और प्रभावशाली होता है।
2. **समय का सदुपयोग**– पाठ योजना से शिक्षक समय का सही उपयोग कर पाते हैं और निर्धारित समय में पाठ को पूरा करने में सक्षम होते हैं।
3. **शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति**– यह सुनिश्चित करती है कि शिक्षण के उद्देश्य स्पष्ट हों और उन्हें प्रभावी रूप से प्राप्त किया जा सके।
4. **शिक्षार्थी–केंद्रित शिक्षण**– पाठ योजना छात्रों की रुचि, क्षमता और आवश्यकता को ध्यान में रखकर बनाई जाती है, जिससे शिक्षण अधिक प्रभावी होता है।
5. **संसाधनों का सही उपयोग**– यह शिक्षण में उपयोग होने वाली सामग्री और संसाधनों की पूर्व तैयारी में सहायक होती है।
6. **आत्मविश्वास में वृद्धि**– शिक्षक को पाठ पढ़ाने में आत्मविश्वास मिलता है क्योंकि वह पहले से तैयार रहते हैं।
7. **मूल्यांकन में सहायक**– पाठ योजना में मूल्यांकन के तरीकों का उल्लेख होता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि छात्रों ने विषय को कितना समझा है।

प्र–4 सूक्ष्म शिक्षण को समझाइए ।

Explain the micro teaching .

उत्तर सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching) एक शिक्षण तकनीक है, जिसका उपयोग शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए किया जाता है। इसमें शिक्षक को सीमित समय (5 से 10 मिनट) में एक विशेष शिक्षण कौशल या विषय को कुछ विद्यार्थियों के समूह के सामने प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाता है। इसके बाद शिक्षक को प्रतिक्रिया (थ्ममकइंबा) दी जाती है और आवश्यकता होने पर दोबारा प्रयास करने का अवसर भी दिया जाता है।

सूक्ष्म शिक्षण की विशेषताएँ–

1. **लघु रूप में शिक्षण**– यह पूर्ण कक्षा शिक्षण का संक्षिप्त रूप होता है।
2. **एकल कौशल पर ध्यान**– एक समय में केवल एक शिक्षण कौशल जैसे प्रश्न पूछना, उत्तर देना, उदाहरण देना आदि पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

Gurukpo.com No.1 Educational Website in India

3. **सीमित समय**– यह आमतौर पर 5–10 मिनट का सत्र होता है।
4. **प्रतिक्रिया और सुधार**– शिक्षण के बाद प्रशिक्षक और सहपाठियों से प्रतिक्रिया प्राप्त होती है, जिससे शिक्षक अपने प्रदर्शन में सुधार कर सकता है।
5. **पुनर्प्रदर्शन (Re-teaching)**– शिक्षक को सुधार के बाद फिर से पाठ पढ़ाने का अवसर मिलता है।

सूक्ष्म शिक्षण के चरण–

1. योजना बनाना (Planning)
2. प्रदर्शन (Teaching Session)
3. प्रतिक्रिया (Feedback)
4. पुनः योजना (Re-planning)
5. पुनः शिक्षण (Re-teaching)
6. पुनः प्रतिक्रिया (Re-feedback)

प्र– 5 इकाई योजना व दैनिक पाठ योजना में पांच अंतर बताइए ।

Mention five differences between unit plan and daily lesson plan.

उत्तर इकाई योजना (न्दपज च्संद) और दैनिक पाठ योजना (Daily Lesson Plan) दोनों ही शिक्षण योजना के महत्वपूर्ण भाग हैं, लेकिन इनमें कुछ मुख्य अंतर है

जो इस प्रकार है –

1. **अवधि (Duration)**– इकाई योजनाः एक सम्पूर्ण इकाई या अध्याय के लिए होती है, जो कई दिनों तक चलती है। दैनिक पाठ योजनाः एक दिन की एक कक्षा के लिए बनाई जाती है।
2. **विषयवस्तु का क्षेत्र (Scope of Content)**–इकाई योजनाः विस्तृत होती है, जिसमें सम्पूर्ण इकाई के सभी पाठों, उपविषयों और उद्देश्यों को शामिल किया जाता है। दैनिक पाठ योजनाः सीमित होती है, केवल एक पाठ या उपविषय पर केंद्रित होती है।
3. **उद्देश्य (Objectives)**–इकाई योजनाः दीर्घकालिक (Long&term) शिक्षण उद्देश्यों को ध्यान में रखती है। दैनिक पाठ योजनाः तात्कालिक (Short&term) उद्देश्यों पर केंद्रित होती है।
4. **गतिविधियाँ (Activities)**– इकाई योजनाः इकाई के दौरान प्रयोग की जाने वाली विभिन्न शिक्षण विधियों और गतिविधियों का समग्र खाका देती है। दैनिक पाठ योजनाः उस दिन विशेष की गतिविधियों और अभ्यासों का विवरण देती है।
5. **मूल्यांकन (Assessment)**– इकाई योजनाः इकाई समाप्ति के बाद समग्र मूल्यांकन की रूपरेखा देती है। दैनिक पाठ योजनाः प्रतिदिन के शिक्षण के बाद तात्कालिक मूल्यांकन या प्रतिक्रिया पर आधारित होती है।

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

निबंधात्मक प्रश्न–

प्र–1 बही खाता शिक्षण के सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।

Describe the principle of teaching bookkeeping.

उत्तर बही खाता शिक्षण के कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों इस प्रकार है–

छात्र–केंद्रित शिक्षण– शिक्षण प्रक्रिया को छात्रों की आवश्यकताओं, रुचियों और सीखने की शैलियों के अनुसार ढालना चाहिए.

सक्रिय भागीदारी– छात्रों को कक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जैसे कि चर्चा, प्रश्न पूछना, और गतिविधियों में भाग लेना.

स्पष्ट उद्देश्य– प्रत्येक शिक्षण सत्र के लिए स्पष्ट और मापने योग्य उद्देश्य निर्धारित करने चाहिए, ताकि छात्रों को पता चले कि वे क्या सीख रहे हैं.

विविध शिक्षण विधियाँ– वभिन्न शिक्षण विधियों और तकनीकों का उपयोग करना चाहिए, जैसे कि व्याख्यान, चर्चा, समूह कार्य, और परियोजनाएं, ताकि सभी छात्रों को सीखने के अवसर मिलें.

सतत् मूल्यांकन– छात्रों की प्रगति को नियमित रूप से मूल्यांकन करना चाहिए और उन्हें प्रतिक्रिया प्रदान करनी चाहिए, ताकि वे अपनी सीखने की प्रक्रिया में सुधार कर सकें.

समूह कार्य– छात्रों को समूह में काम करने के अवसर प्रदान करना चाहिए, ताकि वे सहयोग और संचार कौशल विकसित कर सकें.

सकारात्मक शिक्षण वातावरण– कक्षा में एक सकारात्मक और सहायक वातावरण बनाना चाहिए, जहाँ छात्र सुरक्षित महसूस करें और बिना किसी डर के सवाल पूछ सकें.

प्रतिक्रिया– छात्रों को उनकी प्रगति के बारे में नियमित रूप से प्रतिक्रिया प्रदान करनी चाहिए, ताकि वे अपनी कमजोरियों और ताकत को पहचान सकें.

आत्म–मूल्यांकन– छात्रों को अपनी सीखने की प्रक्रिया का मूल्यांकन करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि वे अपनी प्रगति को समझ सकें और अपनी सीखने की रणनीति में सुधार कर सकें.

प्र–2 कक्षा कक्ष शिक्षण के सूत्रों का वर्णन कीजिए।

Describe the maxims of classroom teaching.

उत्तर कक्षा–कक्ष शिक्षण में, शिक्षण सूत्रों का पालन करने से विद्यार्थियों के लिए शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावी और उपयोगी बन जाती है। ये सूत्र शिक्षण के कुछ सामान्य नियम हैं, जो अनुभव के आधार पर निर्धारित किए गए हैं।

प्रमुख शिक्षण सूत्र– मूर्त से अमूर्त की ओर (Concrete to Abstract): बच्चों को पहले स्थूल (मूर्त) चीजों और विचारों से परिचित कराएं, फिर धीरे–धीरे उन्हें सूक्ष्म (अमूर्त) अवधारणाओं की ओर ले जाएं।

Gurukpo.com No. 1 Education Web Portal in India

सरल से कठिन की ओर (Simple to Complex)– पहले सरल अवधारणाओं को सिखाएं, फिर धीरे–धीरे जटिल अवधारणाओं की ओर बढ़ें।

ज्ञात से अज्ञात की ओर (Known to Unknown)- बच्चों को पहले ज्ञात चीजों और विचारों से जोड़कर, फिर उन्हें अज्ञात चीजों और विचारों से परिचित कराएं।

क्रिया से ज्ञान की ओर (Activity to Knowledge)– बच्चों को सक्रिय रूप से सीखने में शामिल करें, उन्हें गतिविधियों और अनुभवों के माध्यम से ज्ञान प्रदान करें।

अनुभव से ज्ञान की ओर (Experience to Knowledge)– बच्चों को वास्तविक दुनिया के अनुभवों के माध्यम से ज्ञान प्रदान करें।

शिक्षण कार्य हमेशा उद्देश्य पूर्ण हो– कक्षा में जो भी पढ़ाया जा रहा है, उसका एक निश्चित उद्देश्य होना चाहिए।

सूक्ष्म तथा अमूर्त विचारों को सिखाते समय उनका प्रारम्भ आसपास की स्थूल वस्तुओं तथा स्थूल विचारों से करना चाहिये।

प्र–3 सहायक सामग्री से आप क्या समझते हैं? बही खाता शिक्षण में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार की सहायक सामग्रीयो का विवेचन कीजिए ।

What do you understand by teaching aids\ discuss the different types of teaching aid used in teaching bookkeeping-

उत्तर सहायक सामग्री (Instructional Aids) से तात्पर्य उन साधनों, वस्तुओं या उपकरणों से है जो शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, रोचक और समझने योग्य बनाने में सहायता करते हैं। ये सामग्री शिक्षार्थियों को विषयवस्तु को स्पष्ट रूप से समझने, उसका अनुप्रयोग करने और उसे लंबे समय तक स्मरण रखने में मदद करती है। विशेष रूप से बही खाता शिक्षण (Bookkeeping / Accountancy Teaching) में ये सामग्री अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त रूप देने में मदद करती हैं।

बही खाता शिक्षण में प्रयुक्त सहायक सामग्री इस प्रकार है–

1. चार्ट और पोस्टर (Charts and Posters)–

- विभिन्न खाता प्रकारों (नकद खाता, लेजर, जर्नल आदि) को दर्शाने वाले चार्ट।
- लेन–देन के उदाहरणों को समझाने वाले फ्लोचार्ट्स।
- यह छात्रों को अवधारणाओं को नेत्रों के माध्यम से समझने में मदद करते हैं।

2. स्लाइड और प्रोजेक्टर सामग्री (Slides and Projected Materials)–

- पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन द्वारा खाता प्रणाली को दृश्य रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- एनिमेशन और ग्राफिक के माध्यम से लेन–देन की प्रक्रिया स्पष्ट की जाती है।

3. डेमोंस्ट्रेशन वर्कबुक और उदाहरण (Demonstration Workbooks & Examples)–

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

- लेखांकन प्रविष्टियाँ करने के लिए अभ्यास पुस्तिकाएँ।
- शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए वास्तविक जीवन के उदाहरणों का प्रयोग।

4. **स्मार्ट बोर्ड और कंप्यूटर सॉफ्टवेयर–**

- Tally/Busy, या अन्य लेखांकन सॉफ्टवेयर का प्रयोग।
- डजिटल तरीके से खाता प्रविष्टियों की प्रैक्टिकल जानकारी देना।

5. **ऑडियो–विजुअल सामग्री–**

- शैक्षिक वीडियो, ट्यूटोरियल्स और एनिमेशन।
- यह श्रवण और दृश्य दोनों माध्यमों से सीखने में मदद करती है।

6. **फ्लैश काड्र्स (Flash Cards)–** महत्वपूर्ण परिभाषाओं, सिद्धांतों और प्रक्रियाओं को स्मरण कराने हेतु। जैसे – "डेबिट क्या है?" या "जर्नल एंट्री कैसे बनती है?" आदि।

7. **रोल प्ले और गतिविधियाँ–** छात्रों को ग्राहक, विक्रेता, कैशियर आदि की भूमिका निभाने देना ताकि वे लेखांकन प्रक्रियाओं को व्यवहारिक रूप से समझ सकें।

8. **इंटरनेट और ऑनलाइन संसाधन–** लेखांकन से संबंधित वेबसाइट, वीडियो लेक्चर, ऑनलाइन क्विज़ और ई–बुक्स।

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

Unit-3

प्र–1 समीकरण उपागम से आप क्या समझते हैं?

**What do you understand by equation approach **

उत्तर बही खाता में समीकरण उपागम (Accounting Equation Approach) एक ऐसी विधि है जिसके माध्यम से किसी भी व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को एक समीकरण के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। इसे लेखांकन समीकरण (Accounting Equation) भी कहा जाता है।

लेखांकन का मूल समीकरण–

''संपत्ति (Assets) = दायित्व (Liabilities) + स्वामी की पूंजी (Owner's Equity)''

इस समीकरण को डबल एंट्री प्रणाली (Double Entry System) का मूल आधार माना जाता है। उदाहरण – मान लीजिए कोई व्यक्ति व्यवसाय में ₹1,00,000 निवेश करता है।

संपत्ति = ₹1,00,000 (कैश)

दायित्व = ₹0

पूंजी = ₹ 1,00,000

अब समीकरण बनेगाः

₹1,00,000 (संपत्ति) = ₹0 (दायित्व) + ₹1,00,000 (पूंजी)

अब यदि वह ₹20,000 का ऋण लेता है, तोः

संपत्ति = ₹1,20,000 (₹1,00,000 कैश + ₹20,000 ऋण)

दायित्व = ₹20,000

पूंजी = ₹1,00,000

समीकरण–

₹1,20,000 = ₹20,000 + ₹1,00,000

इस प्रकार–

1. हर लेन–देन इस समीकरण को संतुलित रखता है।
2. यह व्यवसाय की वास्तविक वित्तीय स्थिति को दर्शाता है।
3. समीकरण उपागम से आसानी से यह देखा जा सकता है कि संपत्ति कहां से आई – खुद के निवेश से या उधारी से।

प्र–2 रोकड़ बही उपागम को समझाइए ।

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

Explain the cash book approach.

उत्तर रोकड़ बही उपागम (Cash Book Approach) लेखांकन की एक प्रणाली है, जिसमें सभी नकद लेन–देन को सीधे "रोकड़ बही" (Cash Book) में दर्ज किया जाता है। यह एक ऐसी पद्धति है जिसमें नकद खाते की अलग से आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि रोकड़ बही स्वयं नकद खाता होती है।

रोकड़ बही उपागम के प्रमुख बिंदु–

1. **रोकड़ बही एक प्रधान लेखा है**– इसे "मुख्य खाता" माना जाता है, क्योंकि इसमें सभी नकद लेन–देन सीधे दर्ज किए जाते हैं।

2. **दोहरी प्रविष्टि प्रणाली का पालन**– इसमें प्रत्येक नकद लेन–देन के लिए एक प्रविष्टि रोकड़ बही में और एक प्रविष्टि अन्य संबंधित खाता में की जाती है।

3. **तीन प्रकार की रोकड़ बही–**

   एक स्तम्भी रोकड़ बही (Single Column Cash Book)– केवल नकद लेन–देन को दर्शाती है।

   दो स्तम्भी रोकड़ बही (Double Column Cash Book)– नकद और छूट (Discount) दोनों को दर्शाती है।

   तीन स्तम्भी रोकड़ बही (Triple Column Cash Book)– नकद, बैंक और छूट, तीनों प्रकार के लेन–देन दर्शाती है।

4. **लेन–देन का क्रमबद्ध रिकॉर्ड**– सभी नकद प्राप्तियाँ बाईं ओर (डेबिट साइड) और सभी नकद भुगतान दाईं ओर (क्रेडिट साइड) दर्ज किए जाते हैं।

प्र–3 समस्या समाधान विधि के गुण व दोष को समझाइए।

Explain the merits and demerits of problem solving method-

उत्तर समस्या समाधान विधि (Problem Solving Method) एक शिक्षण विधि है, जिसमें विद्यार्थियों को किसी समस्या के समाधान की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल किया जाता है। इस विधि का उद्देश्य छात्रों की सोचने, विश्लेषण करने और निष्कर्ष निकालने की क्षमता को विकसित करना होता है।

समस्या समाधान विधि के गुण (Advantages)–

1. चिंतन और तर्क शक्ति का विकास– यह विधि विद्यार्थियों में तार्किक एवं विश्लेषणात्मक सोच विकसित करती है।

2. **स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता**– छात्र स्वयं समाधान खोजते हैं, जिससे आत्मनिर्भरता बढ़ती है।

3. **रुचिकर एवं प्रेरक**– समस्या हल करने की चुनौती छात्रों में उत्साह और जिज्ञासा बढ़ाती है।

4. **अनुभव आधारित शिक्षा**– छात्र अनुभवों के आधार पर सीखते हैं, जिससे ज्ञान स्थायी होता है।

5. **सहयोग और संवाद कौशल**– समूहों में कार्य करते हुए छात्र सहयोग और संवाद की कला सीखते हैं।

6. **रचनात्मकता का विकास**– इस विधि में विभिन्न समाधान खोजने की प्रक्रिया रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करती है।

समस्या समाधान विधि के दोष (Disadvantages)–

1. **समय–खपत अधिक**–यह विधि अधिक समय लेती है, इसलिए पाठ्यक्रम पूरा करना कठिन हो सकता है।

2. **प्रत्येक विषय में संभव नहीं**– सभी विषयों या अवधारणाओं को इस विधि से नहीं सिखाया जा सकता।

3. **अधिक योजना की आवश्यकता**– शिक्षक को इस विधि के लिए विशेष तैयारी और योजना बनानी पड़ती है।

4. **कमजोर छात्रों को कठिनाई**– सभी छात्र समान रूप से समस्या हल नहीं कर पाते, जिससे कुछ को निराशा हो सकती है।

5. **संसाधनों की आवश्यकता**– प्रयोग, गतिविधियों आदि के लिए अतिरिक्त संसाधनों की आवश्यकता होती है।

6. **शिक्षक की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण**– यदि शिक्षक योग्य नहीं है, तो विधि असफल हो सकती है।

प्र–4 प्रदर्शन विधि को समझाइए ।

Explain the demonstration method-

उत्तर प्रदर्शन विधि (Demonstration Method) एक शिक्षण पद्धति है जिसमें शिक्षक किसी कार्य, प्रक्रिया या कौशल को स्वयं करके दिखाता है ताकि विद्यार्थी उसे देखकर समझ सकें और बाद में खुद भी वैसा ही कर सकें।

प्रदर्शन विधि की विशेषताएँ–

1. **व्यावहारिक दृष्टिकोण**– यह विधि विशेष रूप से तब उपयोगी होती है जब किसी व्यावहारिक कौशल, प्रयोग या प्रक्रिया को सिखाना होता है।

2. **दृश्य शिक्षा**– विद्यार्थी देखकर जल्दी और बेहतर सीखते हैं।

3. **सक्रिय भागीदारी**– विद्यार्थियों की रुचि और सहभागिता बढ़ती है।

4. **तत्काल प्रतिक्रिया**– विद्यार्थी तुरंत प्रश्न पूछ सकते हैं और शिक्षक उन्हें स्पष्ट कर सकते हैं।

Gurukpo.com No. 1 Education Web Portal in India

प्र–5 जर्नल के नियम बताइए ।

Explain the rules of the journals-

उत्तर खाता–बही (लेखांकन) के नियमों को आम तौर पर "लेन–देन के नियम" या "लेजर लेखांकन के नियम" कहा जाता है। इन्हें तीन मुख्य श्रेणियों में बाँटा गया है, जिन्हें स्वर्णिम नियम (Golden Rules) भी कहा जाता है। ये नियम खाता–बही की डबल एंट्री प्रणाली (Double Entry System) पर आधारित होते हैं:

1. **व्यक्तिगत खाता (Personal Account)–**

   नियम– "लेने वाले को डेबिट करें, देने वाले को क्रेडिट करें।"

   उदाहरण– अगर आप राम को ₹500 देते हैं, तो राम का खाता डेबिट होगा क्योंकि वह 'लेने वाला' है।

2. **वास्तविक खाता (Real Account)**

   नियम–"जो आता है उसे डेबिट करें, जो जाता है उसे क्रेडिट करें।"

   उदाहरण– अगर आपने नकद में मशीन खरीदी, तो मशीन (जो आई) को डेबिट किया जाएगा और नकद (जो गया) को क्रेडिट।

3. **नाममात्र खाता (Nominal Account)–**

   नियम– "व्यय और हानि को डेबिट करें, आय और लाभ को क्रेडिट करें।"

   उदाहरण– अगर आपने किराया चुकाया, तो किराया (व्यय) को डेबिट और नकद को क्रेडिट किया जाएगा।

निबंधात्मक प्रश्न–

प्र–1 प्रोजेक्ट विधि का अर्थ बताते हुए उसके सोपानों का वर्णन कीजिए ।

Explain the meaning of project and describe its steps-

उत्तर **प्रोजेक्ट विधि का अर्थ–** प्रोजेक्ट विधि एक शिक्षण विधि है जिसमें छात्रों को किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए वास्तविक जीवन से संबंधित कार्यों में संलग्न किया जाता है। इसमें छात्र स्वयं योजना बनाते हैं, कार्य करते हैं, अनुभव प्राप्त करते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं। यह विधि छात्र–केंद्रित होती है और ज्ञान को व्यवहारिक रूप में सीखने पर बल देती है। प्रोजेक्ट विधि का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में रचनात्मकता, स्वायत्तता, समस्या–समाधान क्षमता और सहयोग की भावना विकसित करना है।

प्रोजेक्ट विधि के सोपान (चरण)–

1. **उद्देश्य का चयन (Selection of the Objective)**– इस चरण में शिक्षक और छात्र मिलकर किसी समस्या या विषय का चयन करते हैं, जो छात्रों की रुचि और आवश्यकता से संबंधित हो।

Gurukpo.com No 1 Educational Web Portal in India

2. **योजना निर्माण (Planning)**–इस चरण में छात्रों द्वारा यह तय किया जाता है कि कार्य कैसे किया जाएगा, कौन–कौन से संसाधन चाहिए होंगे, कार्य का विभाजन कैसे होगा आदि।

3. **कार्यान्वयन (Execution)**– योजना के अनुसार प्रोजेक्ट पर कार्य किया जाता है। छात्र स्वयं कार्य करते हैं और शिक्षक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

4. **प्रस्तुतीकरण (Presentation)**– कार्य पूरा होने के बाद छात्र अपने प्रोजेक्ट को कक्षा में या किसी मंच पर प्रस्तुत करते हैं।

5. **मूल्यांकन (Evaluation)**– इस अंतिम चरण में प्रोजेक्ट की उपयोगिता, सटीकता, प्रस्तुति और शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति का मूल्यांकन किया जाता है। इसमें शिक्षक और छात्र दोनों भाग ले सकते हैं।

प्र–2 बहीखाता शिक्षण की विधियों का वर्णन कीजिए ।

Describe the method of teaching bookkeeping-

उत्तर बही खाता शिक्षण पद्धतियों का वर्णन– बही खाता शिक्षण में विभिन्न शिक्षण पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं, जिससे विद्यार्थी लेखांकन के सिद्धांतों को आसानी से समझ सकें और व्यावहारिक रूप से उनका उपयोग करना सीखें। नीचे प्रमुख बही खाता शिक्षण पद्धतियाँ दी गई हैं:

1. **वर्णनात्मक पद्धति (Descriptive Method)**– इस पद्धति में शिक्षक बही खाता से संबंधित सिद्धांतों और प्रक्रियाओं को मौखिक या लिखित रूप में समझाते हैं। यह पद्धति प्रारंभिक ज्ञान देने के लिए उपयोगी होती है।

   विशेषताएँ– सरल और स्पष्ट व्याख्या अवधारणात्मक समझ विकसित होती है। छात्रों को सुनने और लिखने की आदत बनती है

2. **प्रदर्शन पद्धति (Demonstration Method)**– इस पद्धति में शिक्षक खुद बही खाता तैयार कर के दिखाते हैं। ब्लैकबोर्ड, चार्ट या प्रोजेक्टर का उपयोग करके खातों की प्रविष्टियाँ करके छात्रों को दृश्य रूप में सिखाया जाता है।

   विशेषताएँ–

   दृश्य और व्यावहारिक सीख

   छात्रों का ध्यान केंद्रित रहता है

   त्रुटियों की संभावना कम होती है

3. **प्रयोगात्मक पद्धति (Practical Method)**– छात्रों को स्वयं बही खाता तैयार करने, लेन–देन दर्ज करने और संतुलन निकालने के अभ्यास कराए जाते हैं। यह सबसे प्रभावी पद्धति मानी जाती है।

   विशेषताएँ–

   अनुभवात्मक अधिक।

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास में वृद्धि।

गलतियों से सीखने का अवसर।

4. **समूह शिक्षण पद्धति (Group Teaching Method)**– विद्यार्थियों को छोटे समूहों में बाँटकर बही खाता बनाने का कार्य दिया जाता है। इससे सहयोग और सहभागिता की भावना विकसित होती है।

विशेषताएँ–

टीमवर्क का विकास।

विचार–विनिमय के अवसर।

सहपाठी शिक्षण (Peer Learning)

5. **परियोजना पद्धति (Project Method)**– छात्रों को एक काल्पनिक या वास्तविक व्यवसायिक संस्था का खाता तैयार करने का प्रोजेक्ट दिया जाता है। वे आरंभ से अंत तक पूरा लेखांकन कार्य करते हैं।

विशेषताएँ–

दीर्घकालिक अभ्यास।

समस्याओं के समाधान की क्षमता में वृद्धि।

संपूर्ण लेखांकन प्रक्रिया की समझ।

6. **ऑडियो–विजुअल विधि (Audio&Visual Method)**– इस पद्धति में शिक्षण के लिए वीडियो, एनिमेशन, पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन आदि का प्रयोग किया जाता है ताकि बही खाता की प्रक्रिया को और अधिक आकर्षक और प्रभावी बनाया जा सके।

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

Unit-4

प्र–1 एक अच्छे वही खाता शिक्षक के गुणों को बताइए ।

Explain the qualities of a good book keeping teacher.

उत्तर एक अच्छे बहीखाता (Accountancy) शिक्षक के कई महत्वपूर्ण गुण होते हैं जो उन्हें एक प्रभावशाली और प्रभावकारी शिक्षक बनाते हैं। एक अच्छे बही खाता शिक्षक में निम्न गुण होने चाहिए

1. **विषय का गहरा ज्ञान**– एक अच्छे शिक्षक को लेखा शास्त्र (accounting) की अवधारणाओं, सिद्धांतों और व्यावहारिक उपयोगों का गहन ज्ञान होना चाहिए।
2. **सरल भाषा में समझाने की क्षमता**– जटिल अवधारणाओं को सरल, स्पष्ट और दिलचस्प तरीके से समझा पाने की क्षमता एक अच्छे शिक्षक की पहचान होती है।
3. **धैर्य और सहनशीलता**– छात्रों के प्रश्नों और शंकाओं को धैर्यपूर्वक सुनना और उन्हें दोबारा समझाना आवश्यक होता है।
4. **अनुशासन और समय प्रबंधन**– कक्षा में अनुशासन बनाए रखना और समय का सही उपयोग करना जरूरी है ताकि पाठ्यक्रम समय पर पूरा हो सके।
5. **आधुनिक तकनीक का प्रयोग**– कंप्यूटर आधारित अकाउंटिंग, टैली, स्प्रेडशीट आदि आधुनिक तकनीकों की जानकारी और उनका उपयोग शिक्षण में करना लाभकारी होता है।
6. **प्रैक्टिकल एक्सपोजर**– सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ वास्तविक जीवन के उदाहरण देकर पढ़ाना सीखने की प्रक्रिया को और प्रभावी बनाता है।
7. **प्रेरणादायक व्यतिव**– एक अच्छा शिक्षक छात्रों को न सिर्फ विषय में रुचि दिलाता है, बल्कि उन्हें आत्मविश्वास और मेहनत की प्रेरणा भी देता है।
8. **लगातार सीखने की इच्छा**– लेखांकन क्षेत्र में लगातार बदलाव होते रहते हैं, इसलिए शिक्षक को भी अपडेट रहना चाहिए।
9. **संचार कौशल (Communication Skills)**– स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से बात करने की क्षमता छात्रों के साथ बेहतर संबंध बनाने में मदद करती है।

प्र–2 पाठ्यक्रम का अर्थ स्पष्ट कीजिए

Explain the meaning of curriculum.

उत्तर पाठ्यक्रम (Curriculum) का अर्थ एक ऐसे सुनियोजित और संरचित शिक्षण योजना से है, जिसके अंतर्गत किसी विशेष कक्षा या स्तर पर विद्यार्थियों को दिए जाने वाले शिक्षण विषयों, क्रियाकलापों, अनुभवों, और शिक्षण विधियों का समावेश होता है। यह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए तैयार किया जाता है।

पाठ्यक्रम की परिभाषाएँ–

Gurukpo.com
N1 Educational Web Portal in India

1. **रॉस (Ross)**– "पाठ्यक्रम वह समस्त ज्ञान, अनुभव, गतिविधियाँ और मूल्य हैं जो विद्यालय में विद्यार्थी ग्रहण करता है।"

2. **कृंबोल्ट्ज़ (Krumboltz)–** "पाठ्यक्रम केवल विषयों की एक सूची नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के अनुभवों की एक श्रृंखला है जिसे विद्यालय उन्हें प्रदान करता है।"

3. **टेलर (Tyler)–** "पाठ्यक्रम उन उद्देश्यों, शिक्षण–सामग्री, शिक्षण कार्यविधियों और मूल्यांकन साधनों का एक व्यवस्थित स्वरूप है जिनके द्वारा शिक्षा दी जाती है।"

प्र–3 पाठ्यचर्या व पाठ्यक्रम में अंतर लिखिए।

Write the differences between curriculum and syllabus-

उत्तर पाठ्यचर्या (Curriculum) और पाठ्यक्रम (Syllabus) में निम्नलिखित अंतर होते हैं–

1. पाठ्यक्रम– पाठ्यक्रम वह मार्ग है जिस पर चलकर लक्ष्य तक पहुंचा जा सकता है, जबकि पाठ्यचर्या लक्ष्य पर पहुंचने का स्थान है।

2. पाठ्यक्रम का अध्ययन क्षेत्र संकुचित होता है– जिसमे मात्र इस बात का ज्ञान होता है कि विविध स्तरों पर बालकों को विभिन्न विषयों का लगभग कितना ज्ञान प्राप्त हुआ। जबकि पाठ्यचर्या का क्षेत्र पाठ्यक्रम की तुलना मे अत्यन्त व्यापक होता है जो छात्र के जीवन के लगभग सभी पक्षों से संबंधित होता है।

3. पाठ्यक्रम में पाठ्यवस्तु का व्यवस्थित स्वरूप है जो कई विद्वानों के सहयोग से निर्मित होता है, जबकि पाठ्यचर्या गन्तव्य स्थान तक पहुंचने तक की प्रक्रिया का विषय ज्ञान है।

4. पाठ्यक्रम में रटने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करके परीक्षा में सफल होना ही मुख्य लक्ष्य माना जाता है। पाठ्यवस्तु में छात्रों की तात्कालिक क्रियाओं को महत्व दिया जाता है। पाठ्यचर्या तथ्यों को रटने की उपेक्षा करता है एवं बालक के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता देता है।

5. पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम मे एक अंतर यह भी है कि पाठ्यक्रम की प्रकृति पाठ्यक्रम आधारित होती है। जबकि पाठ्यचर्या की प्रकृति परिस्थिति, आवश्यकताएं एवं समस्याओं पर आधारित है।

प्र–4 एक अच्छी पाठ्यपुस्तक की विशेषताएं लिखिए ।

Write the characteristics of a good text book.

उत्तर एक अच्छी पाठ्यपुस्तक (Textbook) की विशेषताएं निम्नलिखित होनी चाहिएः

1. **पाठ्यक्रम के अनुसार हो**– पाठ्यपुस्तक संबंधित कक्षा और विषय के पाठ्यक्रम (syllabus) के अनुरूप होनी चाहिए।

2. **संपूर्ण विषयवस्तु**– उसमें विषय की सभी आवश्यक जानकारियाँ स्पष्ट और विस्तृत रूप से दी गई हों।

GURUKPO.com No. 1 Educational Web Portal in India

3. **सरल और स्पष्ट भाषा**– भाषा आसान, समझने योग्य और विद्यार्थियों की मानसिक क्षमता के अनुरूप होनी चाहिए।

4. **चित्र और चार्ट का समावेश**– जटिल बातों को समझाने के लिए उपयुक्त चित्र, चार्ट, मैप और ग्राफ दिए गए हों।

5. **आकर्षक प्रस्तुति**– पुस्तक की साज–सज्जा, टाइपोग्राफी और लेआउट ऐसा हो कि विद्यार्थी पढ़ने के लिए उत्साहित हों ।

6. **व्यावहारिक उदाहरण**– विषय को जीवन से जोड़ने वाले उदाहरण दिए गए हों जिससे विद्यार्थी उसे बेहतर समझ सकें।

7. **प्रश्नोत्तरी और अभ्यास**– प्रत्येक अध्याय के अंत में अभ्यास प्रश्न, गतिविधियाँ और मूल्यांकन के लिए प्रश्न दिए गए हों।

8. **तथ्यात्मक शुद्धता**– सभी जानकारी प्रमाणित और सत्य होनी चाहिए।

9. **नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश**– पाठ्यपुस्तक में अच्छे संस्कार और सामाजिक मूल्यों को भी स्थान मिलना चाहिए।

10. **नवीनता और अद्यतन जानकारी**– पुस्तक में वर्तमान समय के अनुसार अद्यतन जानकारियाँ भी शामिल हों।

प्र–5 संदर्भ पुस्तकों से आप क्या समझते हैं?

What do you understand by reference book.

उत्तर संदर्भ पुस्तकें" (Reference Books) वे पुस्तकें होती हैं जिनका उपयोग मुख्यतः जानकारी प्राप्त करने, तथ्यों की पुष्टि करने, या किसी विषय को गहराई से समझने के लिए किया जाता है, न कि लगातार पढ़ने के लिए जैसे कि पाठ्यपुस्तकों को पढ़ा जाता है।

निबंधात्मक प्रश्न–

प्र–1 पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।

Describe the principles of curriculum development -

उत्तर पाठ्यक्रम निर्माण (**Curriculum Development**) एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें शिक्षण के उद्देश्यों, विषयवस्तु, शिक्षण विधियों और मूल्यांकन प्रणाली का निर्धारण किया जाता है। इसके निर्माण के दौरान कुछ सिद्धांतों का पालन किया जाता है, जो पाठ्यक्रम को प्रभावशाली, संतुलित और उपयोगी बनाते हैं। पाठ्यक्रम निर्माण के प्रमुख सिद्धांत इस प्रकार है –

1. **उद्देश्य सिद्धांत (Principle of Objectives)**– पाठ्यक्रम का निर्माण स्पष्ट और यथार्थवादी शैक्षिक उद्देश्यों के आधार पर होना चाहिए। उद्देश्यों को विद्यार्थियों की आयु, रुचि, क्षमताओं और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप निर्धारित किया जाना चाहिए।

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

2. **बाल केंद्रित सिद्धांत (Child & Centered Principle)–** पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, रुचियों और अनुभवों पर केंद्रित होना चाहिए। इससे सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावशाली और आनंददायक होती है।

3. **गतिविधि आधारित सिद्धांत (Activity & Based Principle)–** पाठ्यक्रम में ऐसी गतिविधियों को शामिल किया जाना चाहिए जो बच्चों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और क्रियात्मक विकास में सहायक हों।

4. **समाज उपयोगिता सिद्धांत (Social Utility Principle)–** पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो छात्रों को समाज में उपयोगी, उत्तरदायी और जिम्मेदार नागरिक बनने में सहायता करे।

5. **समन्वय और संतुलन सिद्धांत (Principle of Integration and Balance)–** पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों और क्षेत्रों के बीच संतुलन और समन्वय होना चाहिए ताकि समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके।

6. **लचीलापन सिद्धांत (Flexibility Principle)–** पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिए ताकि आवश्यकतानुसार उसमें बदलाव किए जा सकें।

7. **सतत विकास सिद्धांत (Principle of Continuous Development)–** पाठ्यक्रम समय–समय पर पुनरावलोकन और अद्यतन किया जाना चाहिए ताकि यह वर्तमान समय की आवश्यकताओं के अनुरूप बना रहे।

8. विकासात्मक उपयुक्तता सिद्धांत (Developmental Appropriateness)– पाठ्यक्रम छात्रों की मानसिक, शारीरिक, और सामाजिक विकास की अवस्था के अनुरूप होना चाहिए।

प्र–2 उच्च माध्यमिक स्तर पर बही खाता पाठ्यक्रम की समालोचनात्मक समीक्षा कीजिए ।

Critically review the bookkeeping syllabus at higher secondary School-

उत्तर उच्चतर माध्यमिक स्तर पर बही खाता" (लेखांकन) पाठ्यक्रम की आलोचनात्मक समीक्षा में कई पहलू शामिल हैं। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को वित्तीय लेखांकन के बुनियादी सिद्धांतों से परिचित कराना है, जैसे कि लेन–देन की रिकॉर्डिंग, खातों का वर्गीकरण, और वित्तीय विवरणों का विश्लेषण।

सकारात्मक पहलू

आधारभूत ज्ञान

यह पाठ्यक्रम छात्रों को वित्तीय लेखांकन के बुनियादी ज्ञान से परिचित कराता है, जो भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है, चाहे वे लेखाकार बनें या व्यवसाय में अन्य क्षेत्रों में काम करें।

व्यवसाय कौशल– यह पाठ्यक्रम छात्रों को व्यवसाय के विभिन्न पहलुओं के बारे में सिखाता है, जैसे कि आय, व्यय, लाभ, और वित्तीय जोखिम।

आगे की पढ़ाई–यह पाठ्यक्रम छात्रों को लेखांकन के आगे की पढ़ाई के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

आलोचनात्मक पहलू–

निश्चितता– यह पाठ्यक्रम छात्रों के लिए कभी–कभी बहुत ही निश्चित लग सकता है, और उन्हें वित्तीय लेखांकन के बारे में अलग–अलग दृष्टिकोणों को समझने में मदद नहीं करता है।

वास्तविक दुनिया से जुड़ाव– इस पाठ्यक्रम को वास्तविक दुनिया के व्यापारिक वातावरण से अधिक संबंधित बनाया जा सकता है।

सीमितता– यह पाठ्यक्रम छात्रों के लिए कभी–कभी बहुत सीमित लग सकता है, और उन्हें लेखांकन के विभिन्न प्रकार के पहलुओं को समझने में मदद नहीं करता है।

सुझाव–

वास्तविक दुनिया से जुड़ाव– पाठ्यक्रम को वास्तविक दुनिया के व्यापारिक वातावरण से अधिक संबंधित बनाने के लिए, छात्रों को वास्तविक व्यवसाय के मामलों और डेटा का विश्लेषण करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

अतिरिक्त पहलू– पाठ्यक्रम में लेखांकन के विभिन्न प्रकार के पहलुओं को शामिल करने के लिए, जैसे कि प्रबंधन लेखांकन, कर लेखांकन, और ऑडिटिंग।

अलग–अलग दृष्टिकोण– छात्रों को लेखांकन के विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, जैसे कि वित्तीय लेखांकन, और प्रबंधन लेखांकन।

सहभागी शिक्षण– पाठ्यक्रम में छात्रों को सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, जैसे कि वाद–विवाद, समूह कार्य, और केस स्टडी।

निष्कर्ष–बही खाता" पाठ्यक्रम उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन इसे और अधिक उपयोगी बनाने के लिए कुछ बदलाव किए जा सकते हैं। इस पाठ्यक्रम को वास्तविक दुनिया के व्यापारिक वातावरण से अधिक संबंधित बनाने के लिए, और छात्रों को लेखांकन के विभिन्न प्रकार के पहलुओं को समझने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

Unit-5

प्र–1 मापन तथा मूल्यांकन में अंतर स्पष्ट कीजिए ।

Explain the difference between measurement and evaluation -

उत्तर मापन तथा मूल्यांकन में प्रमुख अंतर इस प्रकार है –

मापन (Measurement)– यह किसी वस्तु या घटना की विशेषताओं को संख्यात्मक रूप से व्यक्त करना है, जैसे कि लंबाई, चौड़ाई, वजन, तापमान, इत्यादि. मापन का उद्देश्य विशिष्ट जानकारी एकत्र करना है। उदाहरण के लिए, किसी वस्तु की लंबाई 10 सेंटीमीटर है, यह मापन है। मापन में त्रुटि से बचना बहुत महत्वपूर्ण होता है.।मापन मूलतः तुलना करने की एक प्रक्रिया है.

मूल्यांकन (Evaluation)– यह मापन के परिणामों का अर्थ या मूल्य निर्धारित करना है। मूल्यांकन का उद्देश्य किसी स्थिति या परिदृश्य के बारे में मूल्यांकन या निर्णय करना है। उदाहरण के लिए, किसी वस्तु की गुणवत्ता का मूल्यांकन करना, यह मूल्यांकन है। मूल्यांकन में मापन के परिणामों की व्याख्या शामिल होती है। मूल्यांकन सीखने की प्रगति और उपलब्धि को मापने पर केंद्रित है। मूल्यांकन एकत्रित आंकड़ों के आधार पर निर्णय लेने पर केंद्रित है.

प्र–2 उपलब्धि परीक्षण से आप क्या समझते हैं?

What do you mean by achievement test?

उत्तर उपलब्धि परीक्षण (Achievement Test) से आशय ऐसे परीक्षण से है जो यह मापता है कि किसी व्यक्ति ने किसी विषय में कितनी जानकारी या कौशल अर्जित किया है। यह आमतौर पर किसी पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण या शिक्षा कार्यक्रम के अंत में लिया जाता है, ताकि यह मूल्यांकन किया जा सके कि छात्र ने क्या सीखा है।

उपलब्धि परीक्षण का उद्देश्य–

1. उद्देश्य– छात्र की शैक्षणिक उपलब्धियों का मूल्यांकन करना।
2. उदाहरण– वार्षिक परीक्षाएं, बोर्ड परीक्षाएं, यूनिट टेस्ट आदि।
3. केंद्र बिंदुः–यह ज्ञान या कौशल को मापता है जो पहले सिखाया गया है।
4. उपयोग– कक्षा स्तर, चयन प्रक्रिया, शैक्षणिक प्रदर्शन का विश्लेषण आदि में।

प्र–3 निदानात्मक परीक्षण को स्पष्ट कीजिए।

Explain the diagnostic test.

उत्तर निदानात्मक परीक्षण, सीखने में बच्चों को आने वाली कठिनाइयों का पता लगाने और उनकी पहचान करने के लिए किया जाता है। इसका उद्देश्य छात्रों को समझने में आने वाली कमियों को पहचानना और उनकी क्षमताओं, कमजोरियों, और कौशल का पता लगाना है. यह परीक्षण शिक्षकों को छात्रों को अधिक प्रभावी ढंग से सिखाने में मदद करता है।

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

प्र–4 एक अच्छे परीक्षण की विशेषताएं बताइए।

Explain the characteristics of a good test-

उत्तर एक अच्छे परीक्षण (Test) की निम्नलिखित विशेषताएं होनी चाहिएः

1. **वास्तविकता (Validity)–** परीक्षण उस गुण या क्षमता को सही–सही मापे, जिसे मापने के लिए वह बनाया गया है।
2. **विश्वसनीयता (Reliability)–** परीक्षण बार–बार करने पर समान या लगभग समान परिणाम दे।
3. **निरपेक्षता (Objectivity)–** परीक्षण का मूल्यांकन व्यक्तिगत राय या पूर्वाग्रह से मुक्त हो।
4. **व्यवहारिकता (Practicality)–** परीक्षण का संचालन आसान, समय–साध्य और लागत–कुशल हो।
5. **मानकीकरण (Standardization)–** परीक्षण की प्रक्रिया, वातावरण और दिशा–निर्देश सभी के लिए समान हों।
6. **विभेदन क्षमता (Discriminatory Power)–** परीक्षण सक्षम हो कि वह छात्रों के बीच अंतर स्पष्ट रूप से दिखा सके कृ जैसे कि मेधावी और कमजोर छात्रों में।
7. **समयबद्धता (Time & bound)–** परीक्षण को सीमित समय में पूरा किया जा सके।
8. **पूर्णता (Comprehensiveness)–** यह पाठ्यक्रम के सभी आवश्यक पहलुओं को शामिल करता हो।

प्र–5 ग्रेडिंग प्रणाली पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

Write a short note on grading system-

उत्तर ग्रेडिंग प्रणाली विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को मापने का एक आधुनिक और प्रभावी तरीका है। इसमें अंकों की बजाय ग्रेड (जैसे A] B] C आदि) दिए जाते हैं, जिससे छात्रों पर अत्यधिक अंक प्राप्त करने का दबाव कम होता है। यह प्रणाली सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करती है और प्रतिस्पर्धा के बजाय सहयोग की भावना को बढ़ावा देती है। ग्रेडिंग प्रणाली छात्रों की समग्र क्षमताओं का मूल्यांकन करने में मदद करती है और उन्हें आत्ममूल्यांकन का अवसर भी प्रदान करती है।

निबंधात्मक प्रश्न–

प्र–1 मूल्यांकन के संप्रत्यय को स्पष्ट करते हुए इसकी आवश्यकता एवं महत्व का वर्णन कीजिए ।

Explain the concept of evaluation and describe its needs and importance .

उत्तर **मूल्यांकन का संप्रत्यय (Concept of Evaluation)**– मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी व्यक्ति, वस्तु, प्रक्रिया या कार्यक्रम की गुणवत्ता, योग्यता, प्रभावशीलता और उपयोगिता का निर्धारण किया जाता है। यह केवल अंकों या ग्रेड देने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह यह तय करने का माध्यम है कि निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति किस हद तक हुई है।

सरल शब्दों में, मूल्यांकन का अर्थ है दृ किसी कार्य, व्यक्ति या वस्तु के संबंध में निर्णय लेना कि वह कितना उपयोगी, प्रभावी या मानक के अनुसार है।

मूल्यांकन की आवश्यकता (Need of Evaluation)–

1. **शिक्षण प्रक्रिया की प्रभावशीलता जानने हेतु**– मूल्यांकन से यह ज्ञात होता है कि शिक्षा प्रक्रिया कितनी सफल रही।
2. **विद्यार्थियों की प्रगति मापने हेतु**– यह जानने के लिए कि विद्यार्थी ने क्या सीखा है और कितना सीखा है।
3. **उद्देश्यों की प्राप्ति का मूल्यांकन**– निर्धारित शैक्षिक लक्ष्यों की पूर्ति किस हद तक हुई है, इसका आकलन होता है।
4. **शिक्षण विधियों में सुधार हेतु**– मूल्यांकन से प्राप्त जानकारी के आधार पर शिक्षण पद्धतियों और सामग्री में सुधार किया जा सकता है।
5. **नियोजन और निर्णय लेने में सहायक**–ः इससे नीति निर्धारण और पाठ्यक्रम विकास में मदद मिलती है।

मूल्यांकन का महत्व (Importance of Evaluation)–

1. **व्यक्तिगत विकास में सहायक**– यह छात्र की क्षमताओं, कमजोरियों और रुचियों की पहचान करता है।
2. **प्रेरणा प्रदान करता है**– सकारात्मक मूल्यांकन विद्यार्थियों को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।
3. **शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक**– यह शिक्षकों को उनकी शिक्षण प्रक्रिया की समीक्षा करने और आवश्यक सुधार लाने में मदद करता है।
4. **उचित सुधार के लिए आधार**– मूल्यांकन से प्राप्त परिणामों के आधार पर आवश्यक सुधार किए जा सकते हैं।
5. **शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने का साधन**– यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षा व्यवस्था अपने उद्देश्यों को पूरा कर रही है या नहीं।

निष्कर्षत– मूल्यांकन शिक्षा प्रणाली का एक अनिवार्य और महत्वपूर्ण अंग है जो न केवल विद्यार्थियों की प्रगति को मापता है, बल्कि सम्पूर्ण शिक्षणदृअधिगम प्रक्रिया को दिशा और उद्देश्य प्रदान करता है।

प्र–2 नील पत्रक से आपका क्या आशय है वही खाता में इसकी क्या आवश्यकता है वर्णन कीजिए।

What do you mean by blueprint and what it is need in the bookkeeping describe .

उत्तर ब्लूप्रिंट (Blueprint) से आशय एक पूर्व–निर्धारित योजना या खाका होता है, जो किसी कार्य को व्यवस्थित ढंग से पूरा करने के लिए तैयार किया जाता है। यह एक ऐसा दस्तावेज़ या योजना होती है जो यह दर्शाती है कि कोई कार्य किस प्रकार से किया जाएगा।

आधार पत्रक की आवश्यकता–

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

प्रश्नपत्र का निर्माण सरल

समय की बचत

प्रश्नों की कठिनाई स्तर का पता चलना

उद्देश्य आधारित प्रश्न तैयार करना

अंको का पता लगाना

प्र–3 निबंधात्मक परीक्षा से क्या अभिप्राय है इसके गुण दोष की विवेचना कीजिए ।

What is meant by essay type test discuss its merits and demerits-

उत्तर निबंधात्मक परीक्षा का अभिप्राय– निबंधात्मक परीक्षा एक ऐसी परीक्षा प्रणाली है जिसमें परीक्षार्थी को किसी विषय पर अपने विचारों को विस्तारपूर्वक लिखना होता है। इसमें उत्तर सीमित शब्दों या विकल्पों में नहीं होता, बल्कि विद्यार्थी को अपने विचारों को क्रमबद्ध, तार्किक और विस्तृत रूप में प्रस्तुत करना होता है। यह परीक्षा अभिव्यक्ति क्षमता, विश्लेषण शक्ति और ज्ञान की गहराई को मापने का माध्यम होती है।

निबंधात्मक परीक्षा के गुण (Advantages)–

1. **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता**– परीक्षार्थी को अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है।
2. **चिंतन और विश्लेषण की क्षमता का परीक्षण**– यह परीक्षा गहराई से सोचने और विश्लेषण करने की योग्यता का आकलन करती है।
3. **व्यक्तित्व का विकासः इससे विद्यार्थी के भाषा**–ज्ञान, लेखन–शैली और तार्किक क्षमता का विकास होता है।
4. **मूल्यांकन की व्यापकता**– परीक्षक को विद्यार्थी की सोच और समझ को गहराई से परखने का अवसर मिलता है।

निबंधात्मक परीक्षा के दोष (Disadvantages)–

1. **मूल्यांकन में व्यक्तिवाद**– परीक्षक के दृष्टिकोण और मनोवृत्ति के अनुसार अंक देने में पक्षपात हो सकता है।
2. **समय की अधिक आवश्यकता**– निबंधात्मक उत्तर लिखने में विद्यार्थी और परीक्षक दोनों को अधिक समय लगता है।
3. **मानकीकरण की कमी**– सभी परीक्षकों द्वारा एक ही उत्तर को समान रूप से आंकलन करना कठिन होता है।
4. **अवांछित सामग्री का समावेश**– कभी–कभी परीक्षार्थी विषय से भटककर अनावश्यक बातें लिखते हैं, जिससे मूल्यांकन कठिन हो जाता है।

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal India